अना

मास्को मे ये तीसरा वर्ष था।मै गर्मी की छुट्टियों मे वरसावा जाने की सोच रखा था.कि अचानक आलवीना का फोन आया।वो अपने मॉ बाप और अपनी बड़ी वहन के साथ अपने दाचे पर जा रही थी.जो मास्को से करीव सत्तर किलोमीटर दूर एक छोटे से गॉव शिशकिना मे था।मै वरसावा का टिकट वुक करवा रखा था।मैने झटपट उसे कैन्सल करवाया.और दूसरे दिन ठीक सुबह पॉच बजे अपना सामान लिए मास्को के एक छोटे से लोकल स्टेशन पर जा पहुँचा।आलवीना से मेरा परिचय अभीं नया ही था।उससे और उसके परिवार से मै सिर्फ एक बार ही मिला था।इस दिशा मे एलेजिचका का ये अन्तिम स्टेशन था.जहॉ से आलवीना का दाचा तकरीवन पन्द्रह किलोमीटर दूर था।जन्गल के रास्तों से गिरते पड़ते खरोंचे खाते मै बढा जा रहा था.कि अचानक आलवीना चिल्लाईःवो देखो हमारा गॉव! अब ज्यादे दूर नही है।चीड़ के जन्गलों से घिरे दो चार घरों के लाल खपरैल वाकई नजर आ रहे थे.जिनके ऊपर बादल का एक बड़ा सा टुकड़ा थमा पड़ा था।बाकी लोग आराम से अपना रूकजाक कन्धे पर लटकाए बढे जा रहे थे।बस मै ही एक अकेला अपना रूकजाक लिए पछाड़ें खा रहा था।मुझमे एक कदम भी आगे बढने की हिम्मत न थी।वस आलवीना का ख्याल आते ही मै अपनी उखड़ी सांसे संजोने लग पड़ता था।अव मेरे पास सिवाय आलवीना के मास्को मे कुछ भी शेष न बचा था।मेरे तमाम दूसरे सम्बन्ध समाप्तप्राय हो चले थे।उन्हे निवाहने का समय मेरे पास नही था।अव मुझे बस आलवीना मे ही अपना भाग्य और दुर्भाग्य. हॅसना और कलपना ढूँढना था।अब उसी के हॅाथों मेरा सब कुछ निर्धारित होना था।ये मेरा अपना निर्णय था.जो मै पूरी दृढता से ले चुका था।

आखिरकार हम शिशकिना जा पहुँचे.जहॉ आलवीना के पिता अलवर्ट के हॅाथो खड़ा किया गया तीन कमरों का एक मामूली सा मकान था।नीचे दो कमरे थे.जिसे आलवीना की मॉ जीना ने मास्को के छोड़े सामानो से सजा रखा था।एक कमरा ऊपर था.जहॉ जाने के लिए एक वॉस की सीढी थी.जो आलवीना और उसके वहन के कमरे के एक कोने मे खड़ी थी।ये मेरा कमरा था।मकान के सामने एक बड़ा सा रसोईघर था.जिसकी सारी दीवारें शीशों के दरवाजों से बनी हुई थीं।ये सब कुछ अलवर्ट ने अपने हॅाथों खड़ा कर रखा था।अहाते के एक कोने मे एक टवायलेट भी था।वो भी अलवर्ट आसपास के जन्गलों से चीड़ की चुराई लकड़ियों से बनाया था।ये एक छोटा सा कमरा था.जिसके फर्श पर एक गोल सी छेद थी.जिसपर एक लकड़ी का ढक्कन पड़ा था।ढक्कन के बगल मे एक टवायलेट पेपर का रोल.एक कोने मे चूने से भरी बाल्टी और एक ताखे पर एक लैम्प.जो जानवरों की चर्वियों से जलता था।छेद के ठीक नीचे एक बड़ा सा ड्रम रखा था।टवायलेट मे जाने के लिए भी सीढियॉ चढनी पड़ती थी।दोपहर का खाना खाने के बाद जव मै अपना रूकजाक लिए अपने कमरे की तरफ बढा तो अलवर्ट ने मुझे खुद ही बतायाःये जो कुछ तुम देख रहे हो मेरे अपने हॅाथ का बनाया हुआ है।लेकिन तुम डरना नही.सब कुछ मजवूती से खड़ा है।बस यहॉ पानी और बिजली की कोई व्यवस्था नही है.पर हर कमरे मे एक लैम्प है.जिसके बगल मे हमेशा एक लाईटर पड़ी रहती है।खाने पीने का पानी हम सामने वाले कुएँ से लाते हैं और नहाने धोने के लिए वो सामने वाली पहाड़ी नदी मे जाते हैं।

मेरा कमरा दूसरे कमरों की अपेक्षाकृत थोड़ा छोटा था.पर इसमे एक बड़ी सी खिड़की थी।यहॉ अलवर्ट के हाथों की बनाई एक लकड़ी की चौकी और पायताने की तरफ एक खुली आलमारी थी।आलवीना मेरा कमरा साफ सूफ कर के मेरा बिस्तर वगैरह ठीक कर आई थी।साफ सूथरे बिस्तर और पर्दो मे मुझे अपना कमरा बड़ा ही आरामदेह लगा।

शिशकिना गॉव से मेरी यादें आलवीना के संग वेहद जुड़ी हुई हैं ये तो सत्य है.पर इस चारदीवारी के ईर्द गिर्द भी एक अनूपम संसार फैला हुआ था।

एक दिन मै पानी लाने बाल्टी और रस्सी लेकर कुएँ की तरफ जाने ही वाला था.कि अचानक आलवीना की मॉ ने मेरे हाथ से बाल्टी और रस्सी छीन ली और मुझे ये कह कर कुएँ की तरफ जाने से मना कर दियाःजव वो बुढिया पानी भर कर चली जाय.तव वहॉ जाना।वो डायन है।उसका पति भरी जवानी मे ही चल बसा।उसके तीन बेटों मे से एक भी पन्द्रह वर्ष का न हो पाया।अगर ये किसी को देख भी ले तो उसका पेट दुखना शुरू हो जाता है।उसके हॅाथ का दिया खाने पीने का सामान किसी को पचता नही है.उसे दस्त लग जाती है।पता नही कितनो को इसने मारा है और कितनो को मारेगी!मरने का नाम तक नही ले रही है।

मैने इस बुढिया को पास से तो कभी नही देखा था.पर उसे रोज ही तड़के सुबह जॅगलो से आते देखता था।उसकी टूटी डोलची जंगली सेवों से भरी होती थी।उसके कंधे पर लकड़ियों का ढेर रहता था।उसका जीर्ण शिर्ण घर और बेड़ा मेरे खिड़की से साफ नजर आता था।अक्सर वो अपने वेड़े के मरम्मत मे लगी रहती थी.जो कई जगहों से टूट चला था।उसके वेड़े मे मुझे दो चार सूअर एक बछड़ा और आठ दस मुर्गे मुर्गियॉ भी नजर आते थे .जिन्हे वो बड़े प्यार से चारा दाना देती थी।उसे मैने कभी नजर उठा कर चलते नही देखा।उसकी नजर हमेशा झुकी ही रहती थी।उसके सूअर अक्सर बाड़े से भाग लेते थे.जिन्हे वो इशारे से वापस बुला लेती थी फिर रस्सियों से बाड़े के मरम्मत मे जुट जाती थी।

शाम के खाने पर जीना ने इस बुढिया के बारे मे और बहुत कुछ बतायाःअनुमानतः उसकी उम्र सत्तर और अस्सी वर्ष के बीच थी।उसका पति पास के ही एक कालखोज मे चरवाहा था और वो कालखोज के एक मागासीन मे काम करती थी।उसका घर भी अनुमानतः पच्चास वर्ष पुराना था.जिसे उसके पति ने अपने दोस्तों की मदद से खड़ा किया था।एक दिन वो अपने अहाते का वर्फ साफ कर रहा था कि अचानक गिर पड़ा.फिर उठा ही नही।इसका बड़ा बेटा तेरह वर्ष की उम्र मे कालखोज की एक ट्रक के नीचे आ गया.दूसरा बेटा उसके अपने हॅाथो मे सदा के लिए सो गया और तीसरा एक प्लाचीने मे डूब कर मर गया।इस हत्यारिनी के बारे मे हजारों किस्से हैं।तभी अलवर्ट ने जीना को टोकाःअव बन्द भी करो अपने किस्से .वरना बच्चे रात मे उल्टा सीधा सपना देखेंगे।

फिर वो मेरी ओर देखकर बोलाःतुम्हे अगर वाहर जाना हो तो पीछे वाला गेट इस्तेमाल करना और अगर वो बुढिया तुम्हे कुछ खाने पीने को दे तो मना कर देना।लादना!

मै भी लादना कहके अपने कमरे मे चला आया।गई रात तक मुझे नींद न आई।मै उस बुढिया के ही बारे मे सोचता रहा।मुझे उससे मिलने की सख्त मनाही थी.पर पता नही क्यों मेरा मन उससे मिलने को कहता था।

आलवीना के दादा दादी की कब्रें शिशकिना गॅाव से लगभग आठ किलोमीटर दूर थीं जहॉ वो हर वर्ष गर्मियो मे एक बार अवश्य ही जाते

थे।आलवीना के चाचा भी कीव से सपरिवार आ जाते थे।खाने पीने का भरपूर सामान वो अपने साथ ले जाते थे।वो पूरे दिन वहीं रहते थे।कब्रों के आसपास की घासें साफ की जाती थीं।वहॉ नए नए फूलों के पौधे लगाए जाते थे।मै उनके साथ नही गया।सर दर्द का बहाना बना कर गॉव मे ही रह गया।जीना जाने से पहले मुझे उस बुढिया से न मिलने की हजारों हिदायतें दे गई।सुवह के छ बजे ही पूरा परिवार निकल पड़ा।अब मेरा रास्ता बिल्कुल साफ था।मैने अपने कमरे की खिड़की से देखा।वुढिया अपने जानवरों को दाना पानी दे रही थी।मै बिना किसी भय और झिझक के उसके पास पहॅुच गया।वेड़े के बाहर से ही मै उसे नमस्ते कहके अपना नाम बताया।वो न सिर्फ चौकी.बल्कि सिहर भी गई।इतने समीप से किसी की आवाज सुने उसे न जाने कितने वर्ष हो चले थे।पहले तो वो मुझे अपलक देखती रही जैसे उसे मेरे इतने समीप होने का विश्वास ही न हो रहा हो।फिर भी उसने मेरे नमस्ते का जवाब दिया और थरथराती आवाज मे पूछाःतुम्हे क्या चाहिये!

मै बिल्कुल सहज और सामान्य थाःमुझे तुमसे परिचय करना है।वेड़े के अन्दर आऊॅ!

पहले तो वो कुछ न बोली।पहॅुचे से अपनी ऑखे पोछती रही।पैरों तक लटके भद्दे और गन्दे एप्रन मे वो सामने खड़ी बस रोए जा रही थी फिर मुझे उसका अस्फूट स्वर सुनाई पड़ाःअगर तुम्हे कुछ हो गया तो गॉव वाले मुझे जिन्दा गाड़ देंगे फिर भी तुम्हारी मर्जी।तुम वोल्कोव परिवार के मेहमान हो न!

विना कोई जबाव दिये मै बाड़े के टूटे फूटे फाटक को धकियाता बाड़े के अन्दर था।उसके सारे मवेशी अपना खाना दाना छोड़कर मुझे घूरे जा रहे थे।मैने मजाक मे बुढिया का हॅाथ अपने हॅाथ मे लेकर उससे कहाःवड़ी दूर से मै तुम्हारे पास आया हॅू।मुझपर कोई टोना टटका मत करना।

उसके ऑसू फिर से बहने लगेःतुम भी लोगों की बातों का भरोसा करते हो!

मैने पूरी दृढता से ना कहकर उसे बताया कि मैने उससे सिर्फ मजाक किया था।

ःअगर मै लोगों की बातों का भरोसा करता तो तुम्हारे पास क्यों आता!एक छोटी सी चमक उसकी ऑखों में तैर गई थी।

उसका नाम अना था।अब मै उसे उसके नाम से ही सम्बोधित करने लगा और वो मुझे मलादोई द्रुग से।मै अब अना का नौजवान दोस्त था।हमारे बीच का ये सम्बोधन अन्त तक बना रहा।

अना का घर अन्दर से उतना जर्जर नही था.जितना बाहर से दिखता था।अना के कमरे मे एक डबल वेड.एक पुरानी सी आलमारी.एक पुराना सोफा.एक बड़ी मेज और एक कुर्सी थी।मेज पर अना के हॅाथो का काढा एक सफेद रंग का कवर बिछा था और सोफे पर एक पुराना सा कम्बल।कमरे की दीवारें उसके हॅाथो के काढे जानवरों की तश्वीरों से भरी पड़ी थीं।फर्श पर एक पुराना सा कालीन बिछा था।मेज पर एक पुराना रेडियो ढॅका तोपा पड़ा था.जिसके बगल मे एक चर्वियों वाला बड़ा सा लैम्प था।इस कमरे के बगल मे एक छोटा सा कमरा था.जिसमे एक लोहे का ओवन था।इस कमरे के ताखे छोटे बड़े बोतलों से खचाखच भरे पड़े थे।ये अना का रसोईघर था।दूसरे कमरे जानवरों के लिए थे.जो साफ सूथरे तो थे.पर उनसे बड़ी बास आ रही थी।कई खिड़कियों के शीशे चनके पड़े थे.जिन्हे अना ने लकड़ियों के फट्टों से बन्द कर रखा था।पूरे घर मे मुझे कहीं कोई लैट्रिन या बाथरूम न दिखा।सालों से इस घर की खिड़कियॉ अना ने न खोली थी।घर मे चारो तरफ दुर्गन्ध ही दुर्गन्ध था।पानी की किल्लत और अपनी वढती उम्र के कारण अना के लिए रोज नहाना या अपनी साफ सफाई सम्भव न थी।उसके कपड़ो से भी बड़ी वास आ रही थी।

मै बुदवुदाता रहा।अना चुपचाप सुनती रहीःकल मै तुम्हारा एक कमरा साफ करके तुम्हारे नहाने धोने का इन्तजाम कर दॅूगा.भले ही मुझे तुम्हारे लिए सैकड़ो बाल्टियॉ पानी क्यों न लानी पड़े।तुम्हारे अहाते मे एक अरगनी भी बॅाध जाऊॅगा।सुवह कालखोज के मागासीन से तुम्हारे लिए साबुन भी खरीद लाऊॅगा।जानवरो के साथ रह रह कर तुम भी उन्ही की तरह हो गई हो।

मै अपने दिमाग मे सामानों की लिस्ट बनाने मे व्यस्त था.तभी अना ने पूछाःतुम्हारे लिए कुछ अंडे उवाल दॅू! खाओगे न!

मैने तपाक से कहाःहॉ हॉ क्यों नही!पर दस्त तो नही लगेंगे!मेरे इस कहे पर अना न उदास हुई न उसकी ऑखो मे ऑसू आए।वो बस हल्के से मुस्कराकर रसोई की तरफ बढ गई।थोड़ी देर मे वो मेरे लिए चार उबले अंडे लाई और साथ मे एक ग्लास शर्बत भी।फिर मै घंटों उसे अपने मॉ बाप भाई बहनो के बारे मे सुनाता रहा।वो तन्मय होकर मुझे सुनती रही।मेरे सामने न जाने कितनी वार उसकी ऑखे नम हुई सूखीं.जगी और बूझीं।बड़ी ममतामई ऑखें थी अना के पास।मै उसे दूसरे दिन मिलने का वायदा करके वापस अपने कमरे मे लौट आया।घर के दूसरे लोग अभी भी वापस नही लौटे थे।

आधा घन्टा भी नही गुजरा होगा कि मुझे किसी के सीढियो पर चढने की आहट हुई।जीना अपनी ऑखें लाल किये मेरे कमरे मे आई।उसे रास्ते मे ही मेरी करतूतों का पता चल चुका था।ये मेरा उससे पहला झगड़ा था।मैने भी उसे साफ साफ अपना निर्णय सुना दियाःमै अना से मिलने रोज जाऊॅगा।अगर तुम इसे नही स्वीकारती.तो मै अपना सामान वॅाधता हॅू।वाकी दिन मै उसी के संग रह लॅूगा।उसके कई कमरे यॅू ही खाली पड़े हैं।ये सब सुनते ही जीना रोने लग पड़ी और अना को जोर जोर से गालियॉ देने लग पड़ी।

मैने उसे टोकाःजीना!बन्द करो अपना ये नाटक।मै अना के खिलाफ कुछ नही सुनना चाहता.खासकर गालियॉ तो बिल्कुल ही नही।फिर ये वुढिया बुढिया क्यों लगा रखी हो!चलने से पहले उसने कितने आदर के साथ तुम सभी को प्रिवयत बोलने को कहा था।अब आज से तुम भी उस सज्जन महिला को अना के नाम से पुकारोगी।पन्याल्ा!!

जीना अपना पैर पटकती अपने कमरे मे चली गई।परिवार के दूसरे लोग इस झगड़े मे तटस्थ बने रहे।बस आलवीना शाम के खाने पर मेरा तमतमाया चेहरा देखकर रह रह कर मुस्कराती रही।शाम के खाने पर जीना न आई।आलवीना एकाध बार उसे बुलाने भी गई पर उसने मना कर दिया।मेरा गुस्सा लगभग उतर चला था।अपने कमरे मे जाने से पहले मै जीना को हमेशा स्पकोइनी नोच बोलता था।मै उसके कमरे मे गया।जीना मेरी तरफ पीठ किए लेटी थी।मुझे उसपर बड़ी दया आई।मै उसके बगल मे जा बैठा और उसकी पीठ पर हाथ रखकर लगभग रूधे कंठ से इतना ही बोल पायाःमेरी बातों का बुरा न मानना।मै तुम्हे स्पकोइनी नोच बोलने आया हॅू।तुम अगर चाहो तो मुझे मार पीट लिया करो।मुझपर रोक थाम न लगाया करो।मुझे बड़ी घबराहट होती है इन रोक थामों से।

जीना करवट बदली।ऑसू का एक मोटा सा वूॅद उसकी ठूडिया छू रहा थाःतुम उस बुढिया के यहॉ कुछ खाए वाए तो नही!अपनी गलती का भान होते

ही जीना ने अपना प्रश्न सुधाराःतुम्हारी सज्जन सहेली ने तुम्हे कुछ खाने पीने को भी दिया था!
ःहॉ चार उबले अंडे और एक ग्लास शर्वत.मेरे इतना कहते ही जीना फिर उबल पड़ी और अना पर गालियों की बौछार शुरू कर दी।मैने अपने कानो मे झट से अपनी उॅगलियॉ घूसेड़ दीं।मै.अपने कमरे मे वापस चला आया।
पूरी रात न जीना को नीद आई और न मुझे।मै सारी रात अना की विवशता के बारे मे सोचता रहा और जीना मेरे बारे मे।कई बार वो मेरे कमरे मे ये देखने आई कि मै जी रहा हॅू या कब का मर चुका हॅू।
दूसरे दिन सुबह तड़के ही मै अना के पास जा पहॅुचा और उससे कहाःअना मै मागासीन जा रहा हॅू।तुम्हारे लिए मुझे कुछ सामान खरीदने है।मुझे थोड़े बहुत पैसे चाहिये।अगली बार आऊॅगा तो तुम्हे वापस कर दॅूगा।
अना झटके से उठी और मेरे हाथ मे एक बटुआ ही पकड़ा दी.जिसमे सैकड़ों रूबल्स रहे होंगे।मै पच्चास रूबल लेकर उसे उसका बटुआ वापस कर दिया।मागासीन से मैने अना के लिए एक प्लास्टिक की बाल्टी और एक मग.प्लास्टिक की तारें.दर्जनो माचिस के डिब्बे.नमक.चीनी.साबुन कंघी.टूथ ब्रूश पेस्ट तौलिये और पता नही क्या क्या सामान खरीद डाले।मागासीन मे ऐसा कुछ भी नही था.जो अना के काम लायक न हो।अब इन सारे सामानो के सााथ मुझे तीन किलोमीटर की दूरी अकेले ही तय करनी थी।हर बीस कदम पर मुझे रूक कर सुस्ताना पड़ता था।मेरे बगल से शिशकिना गॉव के कई लोग गुजरे.पर मुझे मदद करने को कोई भी तैयार न था।मै गिरता पड़ता शिशकिना की तरफ बढे जा रहा था।अचानक दूर से मुझे अना तेज कदमों से आते दिखी।आधे से ज्यादे सामान उसने ले लिया।सारे सामानो के साथ हम घर आए।मै बेड़े मे ही सारा सामान पटक कर अना के सोफे पर गिर कर लेट गया।थकावट की वजह से मुझे नीद भी आ गई।गई दोपहरी तक मै सोता रहा।अना ने मुझे जगाया तक नही।जब मै जगा तो देखा कि अना मेरे सोफे के सामने अपनी कुर्सी पर बैठे मुझे एकटक निहारे जा रही है।मुझे अपनी ऑखो पर विश्वास तक न हो पाया।अना एक लाल चारखाने के एप्रन मे मेरे सामने बैठी थी।उसने एक गुलाबी रंग का झालरदार ब्लाउज और एक सफेद रंग का स्कर्ट पहन रखा था।उसके पैरों मे अब कोई बदरंगी बिना फीतों की कोई बूट न थी.बल्कि एक सफेद रंग की सैन्डल थी।घर की सारी खिड़कियॉ खुली हुई थीं।मै अकचकाकर उठ बैठा।अहाते मे एक अरगनी तनी थी.जहॉ बीसों कपड़े सूखने को पसारे हुये थे।रसोईघर से लेकर नहाने वाला कमरा तक चमक रहा था।बड़े साफ सूथरे प्लेट मे अना ने मुझे भूना हुआ आलू और मशरूम परोसा और साथ मे बकरे की मसालेदार भूनी मीट भी।पहली बार एक स्प्रीट के साथ मैने अना के साथ प्रोस्ट की।
अब मेरा ज्यादे समय अना के साथ ही गुजरने लगा।मै उसके बाड़े की मरम्मत करने मे लग गया।आलवीना अक्सर मुझे मदद करने आ जाती थी.पर वो अपनी मॉ के डर से बाड़े के बाहर ही रहती थी।मेरे और जीना के बीच का सम्बन्ध सामान्य हो ही नही पा रहा था।रह रहकर वो अना को गालियॉ देने लग पड़ती थी फिर मै भी उसे दो टूक सुना दिया करता था।शाम के खाने पर जीना आए दिन मुझे कोसती थीःअगर तुम्हे बाड़े बागवानी का इतना ही शौक है तो तुम अलवर्ट की मदद क्यों नही करते!धीरे धीरे उस बुढिया का बेड़ा और बगान इस गॉव का सबसे अच्छा होता चला जा रहा है।
मै भी भड़क पड़ता थाःतुम अलवर्ट की मदद क्यो नही करती!थोड़ा सा धूप क्या निकला कि अपने दोनो बेटियों को लेकर प्लाचीने की तरफ बढ निकलती हो और दिन भर पानी मे पैर डाले बैठी रहती हो।मुझपर रोक थाम मेरी मॉ तक न लगा पाई.तुम क्या लगा पाओगी!
अब मुझे उससे नमकहराम सुनना पड़ता था।
अगर आलवीना बीच बचाव न करती.तो मै कब का अना के पास अपना बोरिया बिस्तर लेकर चला गया होता।अना के पास शालीनता और संस्कार है.ये सुनते ही जीना का पारा चढ जाता था।मै उससे ये भी कहने से नही चूकता था कि उसे ये दोनो चीजे जाकर अना से सीख ही लेनी चाहिये।
मेरी पहली गर्मी की छुट्टी आलवीना के दाचे पर बड़ी तनावपूर्ण गुजरीं.पर मैने भी अपना दैनिक कार्यक्रम न बदला।सुबह से शाम तक मै अना के घर की छोटी मोटी मरम्मतें करता था.उसके और उसके मवेशियों के लिए पानी लाता था.अना के हॉथों बनाया खाना डटकर खाता था और उसके सोफा पर दोपहर मे सो भी जाता था।अना के पास बहुत सारी चीजे न थी.जिसे मै अपने कॉपी मे लिख लिया करता था।मै उसे अक्सर कुरेदता भी रहता रहता था.ताकि वो हॅसे और मुस्कराये।अना के अन्दर सब कुछ जम सा गया था.जिसे मुझे पिघलाना था।अना से मै अक्सर पूछा करता था.कि उसे मास्को से और क्या क्या चाहिये!पता नही क्यों वो मेरे इन बातों पर रोने लग पड़ती थी।अब मैने उससे ये सब कुछ पूछना ही बन्द कर दिया.बस मन ही मन सामानो की लिस्टें बनाता रहता था।
शाम के खाने के बाद मै आलवीना के परिवार के साथ घन्टों एक अलाव के सामने बैठा करता था।आलवीना के साथ तो कभीं कभीं गई रात तक।आलवीना मुझे कवितायें या कोई गद्यांश सुनाती रहती थी.जिसका मै सिर्फ कुछ ही अंश सुन पाता था।एकाध बार आलवीना भी अपना किताब पटककर मुझे अकेले अलाव पर छोड़कर सोने चली गई।घर पर अब ये कानाफूसी चल पड़ी थी.कहीं मै बुढिया के गिरफ्त मे तो नही आ गया!वोलकोव परिवार को मेरी बड़ी फिक्र थी।यदा कदा मै आलवीना से माफी मॉग लिया करता था।मै उससे कहता भी थाःइस दाचे पर बस तुम ही हो.जो मुझे थोड़ा बहुत समझना चाहता है।मै यहॉ आया भी हॅू सिर्फ तुम्हारे लिए।तुम्हारे लिए मेरे पास जीवन पर्यन्त समय है।पता नही अना के जीवन के कितने वर्ष शेष बचे हैं!मेरे अलावे उसका कोई सगा भी तो नही है।वर्षो से वो नितान्त अकेली जीये जा रही है।तुम्हे भी उस पर कभीं दया न आई!
अना के घर के खिड़कियों का शायद ही ऐसा कोई शीशा रहा होगा.जो साबूत बचा हो.फिर भी अब वो अपनी एकाध खिड़कियॉ खोले रखती थी।गॉव के लोग अगल बगल से उसे डायन कहके सरक लेते थे।उनके फेके पत्थर कमरों मे आकर गिरते थे।एक दिन किसी का फेका एक पत्थर उसकी ललाट तक फोड़ गया।मै जब उसके पास पहॅुचा.तो वो अपना ललाट पकड़े बैठी थी.और उसकी उंगलियों के बीच से खून रीस रहा था।मै भागा दौड़ा जीना के पास गया और आनन फानन फर्स्ट एड का बक्सा लेकर वापस लौट पड़ा।आलवीना को पता था.कि मुझसे किसी का खून नही देखा जाता।वो मेरे पीछे पीछे भागी आई.पर इस बार वो बेड़े के बाहर न रूकी.वरन अना के कमरे तक चली आई।मै हैरान था।घाव पर मरहम पट्टी करके वो वापस चली गई।मुझे पता था कि आज उसे थोक के भाव में डॉटें सुननी ही सुननी है।
छ सप्ताह बीतने को आए।मै अपना सामान वगैरह बॉध कर सुबह ही सुबह अना से मिलने जा पहॅुचा।वो एक पुराने बड़े से थैले मे मेरे लिए खाने पीने

का ढेर सा सामान बॉध कर मेरा इन्तजार कर रही थी।अब मुझे उससे विदा होना था।जब तक मै जन्गलों मे न खो गया. मुझे उसके हिलते डुलते हॉथ नजर आते रहे।फिर मै उससे आठ महीनों के बाद ही मिल पाऊॅगा।सूखी लकड़ियॉ और घासें तो मै उसके लिए ठीक ठाक इकट्ठा कर आया था।जन्गलों मे आलवीना के साथ इकट्ठी की गई बेरियों और मशरूम्स का आधा भाग मै नियम से उसे ही दे आता था।जीना मुॅह बिचकाती रहती थी। मास्को मे जीना ने अना के सामानो को रसोईघर मे रखने से साफ साफ मना कर दिया।मै उससे फिर उलझ पड़ाःफिर तुम मेरा प्लेट ग्लास और चम्मच भी अलग कर दो।किस बात की चिढ तुम्हे अना से रहती है!तुम्हारा क्या बिगाड़ा है उसने!

जीना भुनभुनाती उठी और पाखाने वाले कमरे का एक ताखा खाली करके एक गन्दा तौलिया मुझपर फेंकती बोलीःअब जाकर करो साफ अपना ताखा और सजाओ दिन भर अपनी सहेली का सामान।

ःजीना!अना के सामान मै पाखाने के कमरे मे रखने से रहा।अगर ये सामान तुम मुझे अपने रसोईघर मे न रखने दोगी तो मै उन्हे अपने कमरे मे रखूॅगा।मेरे कपड़े की आलमारी मे काफी जगह है।जीना अपना पैर पटकते ड्राईन्ग रूम मे चली गई।पूरे दिन मेरी उससे बात चीत बन्द रही।मैने अना के सारे सामान झाड़ पोंछकर अपने कपड़े की आलमारी मे सजा दी।मेरे सिवाय कोई भी अना के सामान छूता तक न था।मै अकेले ही उन्हे साल भर खाता रहा रहा या फिर अपने दोस्तों के बीच बॉटता रहा।अना की याद मुझे हर रोज ही आती थी. पर उससे सम्पर्क करना सम्भव न था।अक्सर मै आलवीना से उसके बारे मे बातें किया करता था।अपने ये आठ महीने नितान्त अकेले अपने कुछ मवेशियों के साथ वो कैसे गुजार ले जाती है!मास्को की भीषण ठंढ. ऊपर से बिना बिजली और पानी का घर. दूर सुदूर तक सिर्फ बर्फ ही बर्फ. आस पड़ोस मे एक इन्सान तक नही. इससे ज्यादे एकाकीपन मेरे लिए कल्पनातित था।

समय के साथ मेरे और जीना के सम्बन्ध सामान्य और फिर से मधुर हो गए. फिर भी हमारे बीच अना विषय न बन पा रही थी।

मास्को मे मुझे अना के काम लायक जो कुछ दिखता था. खरीद लेता था।शनिवार को मै नियमित रूप से आलवीना के साथ मास्को मे चल रहे कन्सट्रक्शनो पर जाता था और वहॉ एक बोतल वोदका देकर ढेर सारी कीलें और लोहे की तारें पैदा कर लाता था।अब तक मै अना के लिए एक बेंत की डोलची. टार्च. ऊनी स्कार्फ. कम्बल. तमाम बीजें. एक बड़ा सा लैम्प. पेट्रोलियम की दो बोतलें. दो बड़े ताले. चाय और काफी की कई पैकेटें इत्यादि खरीद चुका था।जीना के छोड़े गर्म कपड़ो से मेरा एक रूकजाक भर चला था।मेरा दूसरा रूकजाक आकर्षक खाली बोतलों से भरता जा रहा था।मेरा तीसरा रूकजाक कीलों. तारों और दूसरे सामानो से कब का भर चला था।मेरे सामानो का बजन बढता ही जा रहा था।घर के सभी लोग आए दिन मुझपर हॅसते थे।शाम के खाने पर अक्सर जीना मुझे झिड़कती थीःअब तो बन्द करो अपना बाजार।तुमसे अपने सामान तो ढोए नही जाते. और तुम पूरा मास्को ही इकट्ठा किए जा रहे हो।तुम एक बात अपने मन मे गांठ की तरह बॉध लो. तुम्हारी सज्जन और शालीन सहेली के लिए मै कुछ भी उठाने से रही।

मै अपने कंधे उचका देता थाःजब समय आएगा. तब देखा जाएगा।ये जो तुम आलू और पातगोभी की सब्जी रोज मेरे सामने रख देती हो. खाकर मुझसे सुबह उठा तक नही जाता है।थोड़ा मीट वगैरह तक तुम पैदा कर नही पाती हो।रूक्जाकों को उठाने और ढोने की ताकत आखिर कहॉ से लाऊॅ!

मेरे और जीना के बीच की झिड़कियॉ घर के दूसरे लोगों के लिए एक सामान्य सी बात हो चली थी।वो बस चुपचाप सुनते और मुस्कराते रहते थे।इन तमाम झगड़ों और फसादों के बीच ऐसा कोई भी दिन न था कि मैने सोने से पहले जीना को स्पकोईनोच न बोला हो और जीना ने मेरा ललाट चूमकर मेरा हालचाल न पूछा हो।फिर हम बस एक दूसरे से अपने किये की माफी मॉगने लग पड़ते थः. मेरे इस बात का बुरा मत मानना. मेरे उस बात का बुरा मत मानना।

सामान वाकई काफी हो चला था।गर्मी की छुट्टियॉ भी नजदीक आती चली जा रही थीं।ठूॅस ठूॅस कर सामानो को रखने बावजूद मेरे पास पॉच रूकजाक हो चले थे. ऊपर से एक डोलची भी थी।दाचे पर जाने की सुबह मै एक रूकजाक पर बैठे जीना और अलवर्ट को कोसे जा रहा थाःदाचा भी ली तो ऐसी जगह. जहॉ बस गाड़ी तो एक तरफ. एक गदहा तक नही जाता है।

पता नही क्यों जीना को मुझ पर दया आ गई।वो मेरे कमरे मे आई और कहीःइनमे से तुम दो रूकजाक चुन लो. बाकी के दो ओल्गा और आलवीना उठा लेंगी।एक मै ले लेती हूॅ।डोलची भी मुझे दे दो।अलवर्ट के पास ऐसे भी काफी सामान है।बड़ी कृतज्ञता से मैने जीना को देखा।इस प्रकार मेरी समस्या हल हो गई।हम सभी हॅसते खिलखिलाते एलेक्त्रिचका से मेजोनीना स्टेशन जा पहुॅचे।अब हम सबकी हॅसी गायब थी।हमारे दुर्गम सफर को तो अब शुरू होना था।रास्ते भर जीना मुझे डपटती रही।उसका गुस्सा विशेषकर तब भड़कता था. जब मै उसे डोलची से झाड़ हटाने को रोकता था।फिर वो रूककर मुझसे ठीक ठाक ही झगड़ पड़ती थीःडोलची पर खरोंचे आ जाएगीं!मै चार हॉथ कहॉ से लाऊॅ!मेरे चेहरे पर खरोचे लगती रहें।मेरी भी तुम्हे परवाह रहती है!तुम उस बुढिया के पीछे पागल बने बैठे हो।तुम्हारे हल्के फुल्के बुखार तक मै तुम्हारे बिस्तर से दूर नही हटती।तुम एक नम्बर के कृतघ्न और मतलबी हो।बेवकूफ. पागल. बुद्धिहीन हो।पता नही वो मुझे क्या क्या कह जाती थी।मै चुपचाप सब कुछ सुन लिया करता था।इसी मे मेरी भलाई भी थी।अपने दोनो रूकजाकों के साथ कभी कभी मुझे लगता था कि मै शिशकिना पहुॅच ही नही पाऊॅगा।जंगल के सर्पीले रास्तों का कोई अन्त ही न था।अलवर्ट के अलावे हम सभी को रह रह कर सुस्ताने के लिए रूकना पड़ता था।मै तो लम्बा लेट ही जाता था।जीना के डांट फटकार पर मुझे उठना पड़ता था।पसीने मे लथपथ आखिरकार हम शिशकिना पहुॅचे।मै अपने दोनो रूकजाक अहाते मे पटक कर तीर की भॅाति अना के घर की ओर भागा।अना ने हमे आते देख लिया था।वो अपने बाड़े मे खड़ी थी।मै उससे लिपट गया।अना मुझे लिपटाए अपने कमरे मे ले गई. जो एक तरह से चमक रहा था।उसके घर मे भी कहीं कोई दुर्गन्ध नही थी।तभी अना ने मुझसे पूछाःदोपहर का खाना मेरे साथ खाओगे!मैने झट से हॉ मे सर हिला दिया।अना अपनी रसोई मे चली गई और मै एक एक करके अपने सारे रूकजाक वहॉ ले आया।एक बार जीना भी अपने रसोई से बाहर निकल कर मुझे पुकारीःखाना तैयार हो चला है।अपना सारा पदारक पहुॅचा कर कम से कम खाने के लिए आ जाना।मै जाते जाते उसे कह गयाःमुझे भूख नही है. तुमलोग खा लेना।मेरे पास खाने पीने के लिए समय नही है।मै जीना से नमकहराम सुनकर वहॉ से भाग खड़ा हुआ।मेरे लाए सामानो से अना का सोफा और उसका बिस्तर भर चला था।अना को सारे सामान ही मूल्यवान लग रहे थे।एक एक सामान को वो अपने हॉथो से सहलाती थी और रोती जाती थी।उसे मेरी डोलची और कम्बल बड़े पसन्द आए।उसे सबसे ज्यादा तीन बैटरियों वाला टार्च पसन्द आया।बस मेरे पास लौटाने के लिए पच्चास रूबल

नही थे।मुझे उससे कहना पड़ाःमै तुम्हे तुम्हारे पच्चास रूबल नही लौटा पाऊँगा।अपनी पढाई के दौरान शायद कतई ही नही।तुम इस कर्ज को तो भूल ही जाओ।
अना उठ कर मेरा सर अपने कमर से सटा ली और मेरा पीठ सहलाते हुए बोलीःतुम क्यों मेरा कलेजा दुखाते हो!किस काम के हैं मेरे ये रूबल!बिना किसी भय के मेरे पास भागे आते हो।मेरी छोटी सी छोटी बातों का ख्याल रखते हो।ऊपर से वोलकोव परिवार की डांटे भी सुनते हो।
अचानक मुझे याद आया कि पिछली बार चलते वक्त अना ने कहा था कि मै अपनी एक फोटो मढवाकर उसके लिए लाऊँगा।मै खाना वाना छोड़कर भागा।मेरा अपना ये फोटो मेरे अपने रूकजाक मे था।आलवीना मेरा कमरा ठीक ठाक करके मेरे सारे सामान सजा दी थी।मेरा फोटो उसके बिस्तर के बगल वाली मेज पर रखा हुआ था।उसे लेकर मै फिर भाग खड़ा हुआ।
वोलकोव परिवार कसच्योर के सामने बैठने की तैयारी कर रहा था और मै अना के बाड़े मे बैठा उसके हाथों की बनाई शर्वत पीये जा रहा था।अना के सूप की देगची तो मै कब का खाली कर चुका था।अन्धेरा घहरा चुका था.पर आलवीना अभीं भी कसच्योर पर अकेले बैठी कुछ पढ रही थी।रह रहकर मेरी नजर उसकी ओर उठ जाती थी।अब मुझे अना से विदा लेना पड़ा।मै जाकर आलवीना के समीप बिना एक शब्द बोले बैठ गया और सामने से आते और घहराते कोहरों को देखता रहा।न जाने कितनी बार इन कोहरों ने हमें भिंगोया.पर हम गई रात तक वहीं बैठे रहे।
दूसरे दिन पौ फटते ही मै एक कुल्हाड़ी लेकर जंगल की ओर निकल पड़ा।वहाँ तमाम सूखे चीड़ के तने गिरे पड़े थे।उन्हे साफ सूफ करके मै अना के बेड़े मे ला पटकता था।गोकि ये लकड़ियाँ किसी के काम की न थी.फिर भी मुझे बड़ी सावधानी बरतनी पड़ती थी।लोग बाग के जगने से पहले मै बीस से पच्चीस तने रोज ही जंगल से चुरा लाता था।लकड़ियों के अलावे मै जंगल से छोटे छोटे क्रिसमस के पौधे भी चुराता था।आठ बजने से पहले मुझे अपनी चोरिया बन्द करनी पड़ती थी।फिर मै अपने कामों मे लग जाता था.जिनमे बाड़े की मरम्मत.मुर्गियों के दरबों की मरम्मत.सब्जियों.सलादों और फूलों की क्यारियाँ.सर्दी के लिए सूखी लकड़ियों और मवेशियों के लिए हरी घासों का प्रबन्ध एक तरह से मूख्य थे।दोपहर और शाम का खाना मै अना के साथ ही खाता था।शाम होते होते मै थक कर चूर हो जाता था।शाम कसच्योर पर मेरी घायल उंगलिया देखकर जीना का पारा चढ जाता था।वो मुझे डांट डांट कर हार गई।उसकी डांटों का मुझपर कोई असर ही न होता था।खाने के बाद सभी कसच्योर पर जा बैठते थे और मै अपने कमरे मे आकर बिस्तर पर गिर पड़ता था।
धीरे धीरे अना का अहाता चमकता चला जा रहा था।अना भी दिन भर मेरे साथ लगी रहती थी।हमे साथ साथ काम करते देखकर न सिर्फ सारा गाँव .बल्कि आलवीना का परिवार भी कुढता रहता था खास करके अना।पर मेरे लिए ये सब कुछ बेमानी हो चला था।मैने अना के नहाने वाले कमरे और रसोईघर मे कई नए ताखे भी बनाए।मुझे सबसे ज्यादा समय एक छोटी सी लैट्रिन बनाने मे लगा।इन सारे कामों मे मेरे चार सप्ताह देखते ही देखते गुजर गए।अना के बिस्तर पर बिछाया मेरा नया कम्बल.रसोईघर के नए ताखों पर सजी आकर्षक बोतलें.नहाने के कमरे मे अरगनी पर लटका साफ तौलिया.ताखों पर सजी साबुनदानियाँ और दूसरे सामान.प्लास्टिक की ढक्कनदार बाल्टी और मग.मेरा बनाया पीढा.अहाते की अरगनी पर अना के धूले लटकते कपड़े.क्यारियों मे नन्हे छोटे झाँकते पौधे।मेरे बनाए लकड़ी के नए बक्शों मे दाने चुगते मुर्गे और मुर्गियाँ.नए बेड़े मे घू घू करते सूअर के बच्चे।ये सबकुछ देखकर मै फूले न समाता था।अब अना के पास एक मजबूत फाटक था.जिसे वो सांकल और ताले से बन्द कर सकती थी।बाड़े के अन्दर चारो तरफ एक एक मीटर की दूरी पर मैने क्रिस्मस के पौधे रोप दिए थे।
मेरी छुट्टियों के दो सप्ताह शेष बचे थे।मै अब अपना थोड़ा बहुत समय आलवीना के संग भी गुजारना चाहता था।फिर मुझे अना के लिए बेरियाँ और मशरूम्स भी जमा करने थे।सुबह नाश्ते के बाद मै आलवीना के साथ जंगलों मे दूर दूर तक चला जाता था।जब हम दोपहर के खाने पर वापस आते थे.तब हमारी डोलचियाँ बेरियों और मशरूम्स से भरी होती थीं और हमारे हाँथों मे जन्गली फूलों और सूखे पत्तों के कई गुलदस्ते भी होते थे।जीना मेरे गुलदस्ते पाकर खुशी से निहाल हो जाती थी।दोपहर के खाने के बाद मै अना को उसके हिस्से की बेरियाँ और मशरूम्स देने आलवीना के संग जाता था।आलवीना बेड़े के बाहर ही मेरा इन्तजार करती रहती थी।इस वजह से अना मुझे अपने पास लम्बा न रोक पाती थी।शाम के खाने के बाद मै थोड़ी देर अना के पास बैठ आता था और उसका हालचाल पूछ कर उससे ये कह आता थाःरहता तो मै तुम्हारे संग ही हूँ।वोल्कोव्स के यहाँ मै सिर्फ औपचारिकतायें निभाने जाता हूँ।
एक दिन मैने आलवीना से पूछाःतुम मेरे संग कालखोज के मागासीन तक चल सकोगी!
ःक्यों नही!कुछ खरीदना है!
ःहाँ!अना को चीनी नमक और सिरके चाहिये।
सुबह ही आलवीना दो खाली रूकजाक लिए मेरे सामने खड़ी थी।
मेरे पास तीस रूबल थे।हम साथ चल पड़े।मागासीन से मैने एक बोतल वोदका अलवर्ट के लिए खरीदी और बाकी पैसों से अना के लिए चीनी नमक और सिरके की बोतलें।हमे वापस आते आते शाम हो चली थी।अना का घर पहले पड़ता था।अना को सारा सामान पकड़ाकर मै वापस लौट आया।
रह रहकर अना का एकाकी जीवन मेरे आँखों के सामने जीवन्त हो पड़ता था।जब तक उसके हाथ पैर चल रहे है.तब तक तो ठीक है।अपनी बीमारी मे वो क्या करती होगी!हर तरफ लानत और परिष्कार.लाचारी और विवशता।बिना जाने समझे ईश्वर और समाज ने उसे ठुकरा रखा है।कसच्योर पर बैठे मै एक खाका बनाने मे व्यस्त रहता था।अगर मै आलवीना से शादी करके मास्को मे बस जाऊँ तो अना हमारे संग रह सकती है।शहर मे किसे अना के इतिहास के जानने की फुर्सत है!अना का शेष जीवन हमारे संग आराम से गुजर जाएगा।जीना भी समय के साथ हमे स्वीकार कर लेगी।बस मुझसे मेरा अपना देश छूट जाएगा।दूसरा कोई रास्ता मुझे नजर नही आ रहा था।मै मन ही मन ये निर्णय ले चुका था.पर इस बारे मे मैने आलवीना को कुछ नही बताया था।एक बात उसके सामने स्पष्ट हो चली थी कि अना का एकाकी जीवन मेरे लिए बेमानी नही है।धीरे धीरे मै ये भी महसूस कर रहा था कि लोग बाग और यहाँ तक कि जीना भी अब अना के प्रति उतनी आक्रमक नही थी।
एक दिन आलवीना ने सबके सामने अना का पक्ष लेते हुए उसके घर जाने का एलान किया।परिवार के सभी लोग चौंक पड़े।जीना बजाय विरोध करने के चुपचाप बैठी रही।मेरे विस्मयता की कोई सीमा न थी।कल आने वाली सुबह का अना को अंदेशा तक न था।काश ऐसी सुबह उसके जीवन मे हर

रोज ही आती और उससे रूठे लोग उसके पास वापस लौटते. उससे उसका हाल चाल पूछते और उससे अपनी भूलों की माफी मॉगते।अपने अहाते मे लकड़ी की आग पर अना मशरूम्स या दूसरी सब्जियॉ उबाल रही थी।आलवीना उसकी मदद को जा पहुॅची।जेम्स और जेलियो से मेरी लाई बोतले भरती जा रही थी।जन्गली बेरियो और सेवो से अना तरह तरह की वाइने और शर्बत बनाए जा रही थी।मेरा ज्यादे समय बागवानी और मवेशियों के साथ बीतता था।खाने पर हमे हर दिन लकड़ी की आग पर भूने मुर्गे मिलते थे या फिर सूअर के गोश्त।मेरे लगाए फूल अना के अहाते मे लहलहा रहे थे।गॉठ गोभी. पात गोभी. तरह तरह के सलाद. टमाटर हमे ताजे हर दिन ही खाने पर मिलते थे।जीना भी शाम को कसच्योर पर बड़ी सभ्यता से पूछती थीःतुम लोगों का दिन अना के साथ अच्छा बीता!

हमारे मास्को वापस लौटने का दिन वापस सरकता आ रहा था।बड़े भारी मन से मै आलवीना के साथ अना से विदा लेने गया।अना पिछले वर्ष की तरह एक बड़ा सा थैला खाने पीने के सामानों से ठूॅस ठूॅस कर भर रखी थी।हमे गले से लगाने के बाद वो मुझे दो सौ रूबल पकड़ाते हुए बोलीः जब भी तुम्हे समय मिले. अपनी निवेस्ता को खाने पीने के अच्छे होटलों मे न्योता देना।रह रह कर उसके लिए फूल खरीदते रहना।आलवीना को भी उसने जबर्दस्ती पच्चास रूबल ये कहके पकड़ा दीःइन पैसों से तुम मेरे दोस्त के पसन्द की एक फ्रॉक खरीद लेना।

रास्ते भर अना के कहे ये शब्द मेरे कानो मे घनघनाते रहेःमेरा पिछला पैंतीस वर्षो का जीवन सिर्फ सूर्यास्तों से भरा पड़ा था जिसमे तुम पहले सूर्योदय हो।मेरे जीवन मे अंधेरा कहीं नही रहा।

मास्को मे मेरा ये आखिरी वर्ष चल रहा था. जो अपेक्षाकृत कुछ ज्यादे ही व्यस्त था।अना की याद मुझे रोज ही आती थी।जब तब मेरी ऑखे डबडबाने लगती थी।मेरा हॅाथ झट से आलवीना अपने हॅाथ मे ले लेती थी।जीना भी उठकर मुझे गले से लगाकर दिलासा देने लगती थीःरोओ मत।इस बार मै खुद तुम्हारे दो रूकजाक ढो दूॅगी।दाचे पर भी अना के लायक मुझसे जो कुछ भी हो सकेगा कर दूॅगी।

मै जीना की कोख से पैदा तो न हुआ था. पर मैने उसे सर्वदा अपनी मॉ का दर्जा दिया।सबसे ज्यादे मै ही उसकी डॅाट फटकार सुना. पर सबसे ज्यादे मुझे ही उसने अपने गले से लगाया।

मास्को मे खाने पर हर रोज ही अना की कोई न कोई बोतल खुलती थी।सारा परिवार उसे चखता था।बड़ा स्वाद था अना की हॅाथों मे।

मेरी पढाई करीब करीब खत्म हो चली थी. बस एक प्रेक्टिकल बचा था और मुझे अपना डिप्लोम डिफेन्ड करना था।इस बीच जीना ने एक सेकेन्ड हैन्ड गाड़ी खरीद ली थी।ओल्गा अपनी पढाई खत्म करके नौकरी मे आ गई थी. पर वो हमारे साथ ही रहती थी।आलवीना की पढाई खत्म होने मे छ महीने की देरी थी।वो मेरी ही यूनिवर्सिटी मे रसियन फिलोलोजी पढ रही थी।

हमारी गर्मी की छुट्टियॉ शुरू हुई।इस बार हम लिस्सिवा के रास्ते से गॉव आए।न हमे रूकजाक ढोना पड़ा. न जन्गली झाड़ों की खरोचें खानी पड़ी।मै तो दबा कर अना के लिए सामान भरा।

अना क्यारियों मे बीज डाल चुकी थी।उसके जानवर खूले बाड़े मे आ चुके थे।

इस छुट्टी मे मैने अलवर्ट की ज्यादे मदद की और उसके साथ घर से लगा एक कमरा बनाया।ये कमरा आलवीना को मिलने वाला था।फिर भी मेरे पास समय ही समय था।अना अब हमारे साथ ही जन्गलो मे जाने लगी थी।जीना और ओल्गा से भी उसकी बाते होने लगी थी।अलवर्ट तो ऐसे भी अना के खिलाफ कभी न था।अना को हमारे साथ देखकर गॉव वालों की ऑखे फटी की फटी रह जातीं थी।इस बार उसने मेरे मशरूम्स और बेरियॅा लेने से इन्कार कर दिया।

अना के पास पिछले वर्ष का ढेर सारा सामान बचा पड़ा था।सब्जियॉ भी दबा के निकली थी।उसके अनुसार अगर वो अपना हाथ पैर बिल्कुल भी न चलाए. तब भी उसके पास अगले तीन वर्षो का खाना था।बस लकड़ियों की उसे कमी हो जाती है।उसके कामीन की आग आठ महीने बुझती ही नही है।प्रतिदिन दो घन्टे मै उसके लिए नियम से लकड़ी चिरता था।ठंढ के दिनो मे अना जन्गलों मे सिर्फ लकड़ियॉ ही इकट्ठे करने जाती थी।

अना सबसे घूलती मिलती जा रही थी।कई बार वो हमे ताजा कटा मुर्गा साफ सूफ करके दे गई।दो चार अन्डे तो वो हमे हर दिन सुबह ही दे जाती थी।कई बार जीना ने उसे खाने का न्योता भी दिया. पर पता नही क्यों वो मना कर देती थी।वो हमारे बेड़े के अन्दर आने से घबराती थी।बस कसच्योर पर आ जाती थी।गई शाम तक वो हमारे साथ बैठी रहती थी।सिहरन के बढते ही जीना एक कम्बल अना के कन्धे पर डाल जाती थी।

आलवीना का परिवार बड़ी तेजी से अना के करीब आता जा रहा था।गॉव वालों की राय भी अना के प्रति धीरे धीरे बदल रही थी।बस मै अपने निर्णय को कोई प्रारूप न दे पा रहा था।एक साथ हजारों बातें आड़े आ जातीं थीं जिनमे मेरे मॉ के सपने प्रमुख होते थे।अगर मै मास्को से बॅधा. तो मेरा सबकुछ पीछे छूट जाएगा।एक पत्नी के रूप मे आलवीना मुझे निराश न करेगी और मुझे मास्को मे एक अच्छी नौकरी भी मिल जाएगी. पर किस कीमत पर!घर वाले मेरे वापस लौटने के दिन गिन रहे थे।मॉ अपने मन्सूबों मे व्यस्त थी।मेरा सिर झन्नाने लगता था।

सभी को ये पता था कि ये मेरा मास्को मे आखिरी वर्ष है. पर मेरे फैसले के सन्दर्भ मे इनमे से किसी ने भी मुझसे कभीं कुछ न पूछा।अना को भी पता था कि मेरा मास्को मे ये आखिरी वर्ष है!

मास्को वापस आने के बाद मै अपने प्रेक्टिकल के लिए मलदाविया चला गया।वहॉ मै छ सप्ताह रहा।वापस आकर मै अपने डिप्लोम मे जुट गया।मै अपना डिप्लोम बिना किसी परेशानी के डिफेन्ड भी कर गया।जीना इस खुशी मे एक बड़ी सी पार्टी भी दी।मुझे डॅाक्टरेट करने का ऑफर मिला और साथ मे तीन साल का वीसा भी।

अब मै वापस लौटता हूॅ अपने विधि और विधाता के फैसले की तरफ।मै अपने उहापोहों का अन्त चाहता था।एक दिन शाम के वक्त मैने आलवीना को अपना निर्णय सुना ही डाला।वो ऑसुओं मे नहा गई।मै तो घबरा ही गया।सहज होने मे उसे थोड़ा समय लगा।इसके बाद जो कुछ भी मै उसके मुॅह से सुना. उसे इतने वर्षो के बाद भी दुहराना मेरे वश का नही है।जो कुछ भी आलवीना के साथ घटा. यूरोप के लिए ये सब एक आम बात है. पर मै कोई यूरोपियन न था।उसने तो मुझे साफ साफ कह दियाःप्रमोद एक बार मेरी गर्भ गिरवाई गई थी।मै थोड़ा लम्बा हूॅ! कहके उठा और उसे सधे सधाए रसियन मे बस इतना ही कहाःअब मै तुमलोगों के जीवन से दूर जा रहा हूॅ।

मेरे सामने एक हत्यारनी अपनी नजरें झुकाये बैठी थी और मै मन ही मन बस एक ही बात दुहराये जा रहा थाःभावनाओं की गठरी मैने भी किस बाजार

मे खोली!मॉ को बिस्तर भी पकड़वाया तो किसके लिए!
जीना अलवर्ट और ओल्गा भागते मेरे कमरे मे आए।सब के सब मूक दर्शक की तरह कमरे मे खड़े रहे।किसी ने कोई गुहार न लगाई।मै अपने सारे जरूरी कागजात और अपना डिप्लोम एक ब्रीफकेस मे डालकर बिना किसी को कुछ कहे बिना किसी की ओर देखे घर से निकल पड़ा।अब मै खुद को न समझना चाहता था और न समझाना चाहता था।मेरे सामने बस एक ही विकल्प था अल्विदा! दसविदानिया।मै मास्को मे एक पल के लिए भी नही रूकना चाहता था।
मै आलवीना और उसके परिवार से रूठ कर वापस भारत लौट गया।आलवीना की एक भूल ने न सिर्फ मेरे जीवन के साढे सात वर्ष लिप पोत डाले बल्कि मेरा सौन्दर्यबोध भी मेट डाला.जो एक तरह से उसी ने मुझे दिया था।मेरे ये साढे सात वर्ष बड़े वेगमय थे.पर इनके सामने मैने एक ऊँची दीवार खड़ी कर दी।वर्षो तक न मुझे कोई याद आया न मैने किसी को याद किया।आलवीना और जीना के पत्र मेरे माता पिता के पते पर आते रहे और मुझे रिडायरेक्ट हो कर मिलते रहे।इन पत्रों को न मैने कभी खोला और न कभी पढा।मास्को से वापस आने के बाद मै घर पर कुछ दिन रहकर दिल्ली आ गया।दिल्ली मे मै तकरीबन नौ महीने रहा फिर मै बर्लिन आ गया।मास्को से आए तमाम पत्र मेरे साथ थे।बर्लिन मे भी मुझे मास्को के कई पत्र समवेत घर से आए पत्रों के साथ मिले।मेरे जीवन की संक्रमणतायें तो शायद कभीं खत्म न हो पाएगीं.पर एक स्थिरता मेरे जीवन मे भी आई।मैने एक सप्ताह की छुट्टी ली और मास्को से आए सारे पत्र पढने शुरू किये।मास्को छोड़े मुझे तेरह वर्ष हो चले थे।आलवीना के लगभग सारे पत्र मेरे मन और आत्मा को छूए.पर अना के सन्दर्भ मे उसका लिखा एक पत्र मुझे सबसे ज्यादा उदास किया।इस पत्र को मै यहॉ अविकल और अक्षरशः अनुवादित कर दे रहा हूँः
दरोगोई प्रमोद!
मेरी ओर मेरे वेटे दानियल की तरफ से तुम्हे प्रिवयत।मै तुम्हे एक बहुत ही बुरा समाचार देने जा रही हूँ।अना अब हमारे बीच न रही।पिछली सर्दी मे किसी एक दिन उसने अपनी ऑखे मूँद ली।उसके गुजरने के बाद उसके सारे जानवर भी अपना दम तोड़ गए।हमे इसकी खबर मास्को मे इस वजह से मिल पाई कि वो अपना मकान और दस हजार रूबल्स तुम्हारे नाम वसीयत कर दी थी।तुम मेरा विश्वास करो.मै हर वर्ष ही उससे मास्को चलने की जिद करती थी.पर वो इन्कार कर देती थी।तुम्हारे जाने के बाद हम सभी उसका उतना ही ख्याल रखते थे जितना कि तुम।पास के ही कब्रगाह मे उसकी कब्र थी.जहॉ जाते ही मैने उसकी कब्र पक्की करवा कर वहॉ एक एपिटैफ खड़ा करवा दिया।अब मै अपनी छुट्टियॉ अना के घर मे ही बिताती हूँ और दानियल को बताती हूँ कि यहॉ प्रमोद ने ये किया था.वहॉ प्रमोद लकड़ी काटा करता था।
तुम्हारे लगाए क्रिसमस के पेंड़ आसमान छू रहे हैं।मरने से पहले अना ने मेरे नाम भी सात हजार रूबल छोड़ रखे थे।मैने ये पैसे उसके घर पर खर्च कर डाले।अब शिशकिना मे बिजली और टेलीफोन तक आ गए हैं।लिस्सेवा से एक पक्की सड़क भी शिशकिना तक आ चुकी है।अना का घर इस गॉव का सबसे सुन्दर घर है।गर्मियों मे मै दानियल के साथ रोज अना के कब्र पर जाती हूँ।मास्को मे मेरे मेज पर उसकी एक फोटो है जिसके सामने के गुलदस्ते का फूल मै कभी सूखने नही देती।तुम मुझे शायद कभी माफ न कर पाओगे।फिर दानियल के बारे मे भी तुम्हारे पास एकाध प्रश्न होगे!मै सात महीने व्याहता रही.फिर मुझे अपने पति से तलाक लेना पड़ा।मै एक बच्चों के एक स्कूल मे पढाने जाती हूँ।ओल्गा ने शादी न की.पर वो अब हमारे साथ नही रहती है।पापा से अब उतना काम नही हो पाता है।वो कुछ ज्यादे ही अलकोहल पीने लगे है।जीना के अन्दर कुछ जम सा गया है।तुम्हे याद करके वो बस रोती रहती हैं।मेरे लिए न सही.बस एक बार जीना से मिलने आ जाओ और मास्को देख जाओ।अना तो न रही.पर उसकी आत्मा उसके अपने घर मे तुम्हारे हर छोटे बड़े सामानो के आसपास भटकती रहती है।मै किसी भी सामान के पास जाती हूँ तो मुझे एक अस्फूट स्वर हमेशा सुनना पड़ता हैःये टूटने मत देना।ये मेरे मलोदोई द्रुग का है।अना से भी आकर मिल लो।मुझे पता है कि जो इन्सान खुद गलती नही करता.वो क्षमा भी नही कर सकता.जो क्षमा नही कर सकता.वो प्यार भी नही कर सकता.जो प्यार नही कर सकता पता नही वो कैसे जी लेता है!फिर भी मेरा दिल कहता है तुम जहॉ कहीं भी होवोगे.मजे मे ही होवोगे।तुम इतनी दूर से मास्को अकेले आये थे.पर जब तुम वापस गये.तब मैने पूरे मास्को को तुम्हारी खातिर उदास पाया था।अगर तुम ये चाहते हो कि मै तुम्हारे मास्को आने के दौरान वहॉ न रहूँ.तो मुझे बताना।मै दानियल को लेकर कहीं चली जाऊँगी।मै न तुम्हारे लायक थी और न रह गई।मुझे तुम माफ न करना.बस एक बार जीना और अना से मिलने आ जाओ।पापा और मम्मी की तरफ से तुम्हे प्रिवयत।
सप्यारः तुम्हारी आलवीना
आलवीना मेरे लिए एक माले की धागे की तरह थी।बाकी दूसरे सम्बन्ध उसमे गूथे मोतियों की तरह थे।जब धागा ही टूट गया.तब अब मै बिखरे मोतियों को कहॉ कहॉ ढूंढता फिरता!

प्रमोद कुमार सिंह